

- भौगोलिक अवधारणायें:-

- स्वलाकृति (Landform):-

प्रथम श्रेणी - महाद्वीप , महासागर

द्वितीय श्रेणी - पर्वत , पठार , नदी द्रोणी , सागर ,
मैदान झील , तालाब

तृतीय श्रेणी - पहाड़ी , छोटा ताल

मानव निर्मित

चतुर्थ श्रेणी - बांध

⇒ भू-आकृतियां: अन्तर्जात व बहिर्जात प्रक्रियाएं:-

→ अन्तर्जात प्रक्रियाएं (Endogenetic Processes):-

- वे प्रक्रियायें जो भूपृष्ठ के अन्दर उत्पन्न होती हैं। इन प्रक्रियाओं से पर्वत, पठार व मैदान आदि का निर्माण होता है।

- इनसे बालामुखी उद्गात होता है तथा भूकंप आते हैं।

→ बहिर्जात प्रक्रियायें (Exogenetic Processes) :- ये प्रक्रियायें

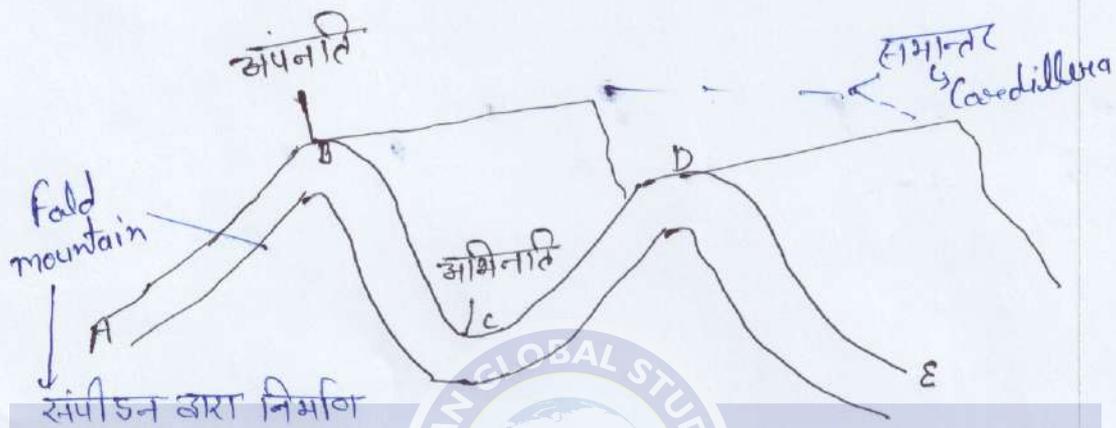
पृथ्वी के धरातल के ऊपर कार्य करके स्वलाकृतियों का निर्माण करती हैं। इनमें अपक्षय (Weathering), अपरदन (Erosion), परिवहन (Transportation) तथा निक्षेपण (Deposition) सामिलित हैं।

- यह कार्य नदी, हिमनदी, वायु तथा सागरीय धारामों द्वारा किए जाते हैं।



- अन्तर्गत प्रक्रियाएँ (भू-संचलन)
- धरातल पर क्षैतिज संचलन मुख्यतः दो रूपों में प्रभाव डालता है।
 - भूपटलीय मोड़ या वलन
 - भूपटलीय भ्रंश
- भूपर्पटी पर क्षैतिज रूप से जाम कर रहे संपीड़न बलों के कारण चट्टान की परतों के मुड़ने की क्रिया को वलन कहते हैं।
- वलन हमेशा शिखरों और द्वीपियों के रूप में होता है। इसके उपर उठे हुए भाग को अपनति (Anticline) तथा नीचे धंसे हुए भाग को अभिनति (Syncline) कहते हैं।
- दबाव अथवा तनाव (Tension) द्वारा जब भूपर्पटी में दरार पड़ जाती है और खल्ल भाग धंस जाए या ऊपर उठ जाए तो उसे भ्रंश कहते हैं।
- भ्रंश से उत्पन्न स्थलरूप: भ्रंशखण्ड, सीढ़ीनुमा ढाल, भ्रंश घाटी, भ्रंशोत्थ पर्वत।
- भ्रंशघाटी (Rift valley) - दो भ्रंशों के बीच की धंसी हुई भूमि को भ्रंशघाटी कहते हैं। - उदाहरण - बाल्केन और ब्लैक फॉरेस्ट के मध्य यूरोप की प्रसिद्ध भ्रंश घाटी है जिसमें राइन नदी बहती है।
- विश्व की सबसे लम्बी रिफ्ट घाटी - जॉर्डन नदी की घाटी, यह लाल सागर की बेसिन से होती हुई जाम्बेजी नदी

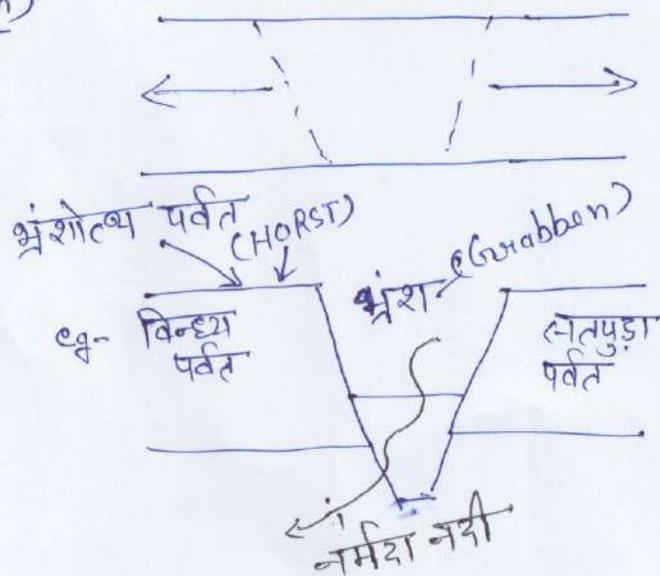
तल 4800 Km लम्बी है। - मृत सागर (Dead Sea) इसी भ्रंश घाटी में है। → भारत की नर्मदा और दामोदर घाटियां - भ्रंशघाटियों के ही उदाहरण हैं।



A, B, C, D, E - पर्वत घाटी स्थलाकृति

Mountain valley Topography

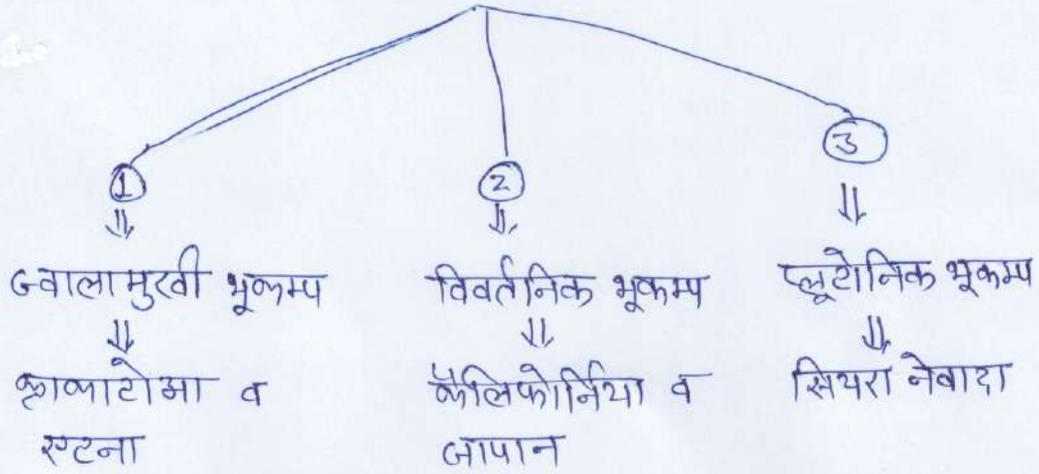
तनाव (Tension)



भूकम्प (Earthquakes)

- ↳ आन्तर्लम्बिक विवर्तनिक हलचल अथवा भूपर्पटी का लम्फन, भूकम्प कहलाता है।
- पृथ्वी के अन्दर जिस स्थान पर भूकम्प उत्पन्न होता है उसे भूकम्पीय केन्द्र (Seismic focus) कहते हैं। इस केन्द्र के डीग ऊपर (90°) पृथ्वी के धरातल पर स्थित स्थान को अधिकेन्द्र (Epicentre) कहते हैं।
- अधिकेन्द्र की स्थिति भूकम्प केन्द्र के डीग लम्बवत होती है।
- भूकम्प के जाटण - G-वालामुखी विस्फोट, पृथ्वी का खिण्डना, वलन तथा अंश, भू-सन्तुलन
- प्रशांत महासागरीय तटीय पट्टी - विश्व के 68% भूकम्प इसी भाग में आते हैं। इसे अग्निवलय (Ring of fire) कहते हैं।
- मध्य महाद्वीपीय पट्टी - यह पट्टी भूमध्य सागर से लेकर पूर्वी द्वीप समूह तक फैली हुई है।
- भूकम्प तीव्रता के मापन - मरकैली मापन, रिक्टर मापन

भूकंप के प्रकार एवं उदाहरण -



ज्वालामुखी (Volcanoes)

- पृथ्वी के धरातल का वह हिस्सा है, जिसमें पृथ्वी के भूगर्भ से आग, गर्म लावा, धुंआं एवं पानी आदि बड़े तीव्र वेग से बाहर निकलता है। - ज्वालामुखी ज्वाल जाता है।

- लावा धरातल पर आने के लिए एक छिद्र बनाता है, जिसे विवर या श्लेटर कहते हैं।

ज्वालामुखी के प्रकार

सक्रिय ज्वालामुखी
Active Volcanoes

↓
- इनमें प्रायः विस्फोट तथा उद्भेदन होता रहता है। एवं आज भी लावा बाहर निकलते रहता है।

उदाहरण

↓
इटली - इटली में स्ट्राम्बोली - सिसली द्वीप (भूमध्य सागर का प्रवाश मीनाट)

फ्यूजीयामा - जापान

प्रसुप्त ज्वालामुखी
Dormant Volcanoes

↓
वर्षों शांत रहने के बाद कभी-कभी अनपेक्षित सक्रिय रूप धारण कर लेते हैं।

उदाहरण

↓
विस्नुवियस - इटली
क्राकाटोआ - इंडोनेशिया

मृत ज्वालामुखी
Extinct Volcano

↓
इस ज्वालामुखी सक्रिय नहीं होते हैं।

उदाहरण

↓
किलिमन्जारो - अफ्रीका
पीपा - म्यांमार

बाह्यज्वालित बल / प्राक्रियार्थ

- कृमण या तल सन्तुलन (Gradation) का अर्थ - भूपृष्ठ की विषमताओं को कम करने समतल करने वाली प्राक्रिया। इससे अन्तर्गत दो प्राक्रियार्थ सम्मिलित हैं।-

1- अधिवृद्धि (Aggradation):-

↳ पृथ्वी के धरातल पर स्थित निम्न प्रदेशों को, नदी तथा अन्य नारणों द्वारा भरे जाने के प्रक्रम को अधिवृद्धि कहते हैं।

- इस प्रक्रिया में स्थल का तल ऊँचा होता जाता है।

2. निम्नीकरण (Degradation) :-

↳ पृथ्वी के उभरे भागों को नदी तथा अन्य जालों द्वारा घिसकर नीचे करने की प्रक्रिया।

↳ इस प्रक्रिया से किसी स्थल का ऊँचा भाग नीचा हो जाता है।

तल सन्तुलन के जाल (Agents of Gradation)

नदियां

पवन

हिमानी

सागर की लहरें आदि

KGS

IAS

KHAN SIR